'इक-दूजे के लिए नहीं' का यथार्थ

डॉ. चंद्रलेखा

डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना ने तीन दशक पहले 'कथा संबंधों का यथार्थ' पर शोधकार्य करके पी.एच-डी. की उपाधि प्राप्त की थी। अनंतर इसी विषय को केंद्र में रख कर उन्होंने अपनी कई कहानियां और उपन्यास भी लिखे, जिसमें उन्होंने प्रेम, विवाह और काम संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और उनका विश्लेषण भी प्रस्तुत किया। उनका नवीनतम कहानी संग्रह 'इक-दूजे के लिए नहीं' भी इसी क्रम में एक ऐसा प्रयास है, जिसे पढ़ने के बाद मुझे लगा कि इसमें संकलित कहानियों पर गंभीर चर्चा होनी चाहिए, क्योंकि इन कहानियों का कथ्य हमारे आज के समकालीन जीवन का यथार्थ है और उससे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता।

डॉ. सक्सेना ने तर्कसंगत ढंग से अपनी कई कहानियों में यह सिद्ध किया है कि विवाह के बाद 'प्रेम' ग़ायब हो जाता है, केवल 'विवाह' बच जाता है और कई बार केवल बच्चों के कारण या अन्य किसी कारण से विवाह को बचाना ज़रूरी भी हो जाता है। और तब व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) या तो हताश और आत्मकेंद्रित हो जाता है या फिर विवाहेतर प्रेम में अपना संतोष खोजने लगता है। यह स्थिति सही है या ग़लत, इसे जानने के लिए भी ज़रूरी है कि हम पहले आज के यथार्थ को जान लें और फिर उसके आधार पर वैवाहिक संबंधों की कमियों को दूर करके उनमें कुछ सामंजस्य या संतुलन स्थापित करने की चेष्टा करें।

अस्तु, 'इक-दूजे के लिए नहीं' कहानी संकलन की कहानियों का विवेचन करते हुए

कृति : 'इक-दूजे के लिए नहीं' का यथार्थ
लेखक : डॉ. वीरेंद्र सक्सेना
प्रकाशक: मेघा बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
मूल्य : 200 रु.
पृष्ठ : 168

मैं यहां यह भी बताने की चेष्टा करूंगी कि विवाह संस्था में क्या क्या कमियां आ गयी हैं और उनका आज का यथार्थ क्या है।

सबसे पहले पहली कहानी 'दो विधवाएं' को लें। यह कहानी बेमेल विवाह की कहानी है, जिसमें पहली स्त्री तो इसलिए 'विधवा' है, क्योंकि उसका पति उससे बेहतर है और दूसरी स्त्री इसलिए विधवा है, क्योंकि उसका पति उम्र में बड़ा और बदतर है! ऐसे विवाहों के अंतर्गत वैवाहिक संबंधों में अतृप्ति और असंतुष्टि ही हो सकती है और वही इस कहानी की स्त्रियों में भी है। इसीलिए सधवाएं होते हुए इस कहानी का शीर्षक 'दो दुखिया' न रख कर 'दो विधवाएं' रखा गया है।

इसी की अगली कड़ी है 'कोटा' शीर्षक कहानी। इसमें भी दो स्त्रियों के वैवाहिक जीवन के यथार्थ की पड़ताल करते हुए लेखक ने यह बताने की कोशिश की है, ''विवाह चाहे स्वेच्छा से ही किया हो, पर उसका आकर्षण कुछ ही वर्षों तक रह सकता है। अधिक से अधिक दस वर्ष तक'' (पृष्ठ 24)।

'कहानी है पुरानी' में भी बेमेल विवाह के माध्यम से पति-पत्नी के विपरीत स्वभाव का चित्रण है, जिसके कारण पत्नी की बहन को आत्महत्या करनी पड़ जाती है। इसी के आगे 'विकिरणगाथा' है, जिसमें पत्नी या कोई अन्य स्त्री आत्महत्या तो नहीं करती, क्योंकि वह सुशिक्षित है। पर आत्मविश्लेषण करते हुए इतना तो वह भी जान लेती है, ''हर औरत उमराव जान है। जिसके साथ रहती है, उसके साथ नहीं होती। जिसके साथ होती है, उसके साथ रह नहीं सकती'' (पृ. 50)। या ''पति परमेश्वर होता है, चाहे पत्नी पी.एच-डी. क्यों न हो'' (पृ. 51)।

'एक अश्लील परिचय' के माध्यम से लेखक ने यह प्रश्न उठाया है कि आख़िर स्त्री और पुरुष के लिए नैतिकता के अलग अलग मानदंड क्यों हैं? इसीलिए इसमें एक लड़की ख़ुद अपने पुरुष मित्र से कहती है, ''तो क्या तुम मुझे एक लड़की नहीं, किताब समझते हो''? एक ऐसी अश्लील किताब जिसे जब जी चाहा चोरी छिपे मांग कर पढ़ लिया और पढ़ने के बाद वापस कर दिया'' (पृ. 59)? इसी तरह 'मुलाक़ातें' की नायिका भी कहानी के अंत में प्रश्न करती है, ''तुम लोग आख़िर स्त्री से चाहते क्या हो? जब वह 'पैस्सिव' होती है, तो उसे 'कोल्ड' कह देते हो और जब 'एग्रेसिव' होती है, तो 'कुलटा' '' (पृ. 76)! और अगली कहानी 'अस्वीकार्य स्वीकार' में भी तथ्यों का विश्लेषण करते हुए यही बात और भी स्पष्ट रूप में कह दी गयी है, ''आधुनिक से आधुनिक पुरुष भी अपनी प्रेमिका को 'पैस्सिव' रूप में ही देखना पसंद करते हैं। ऐसा क्यों है, यह अपने आप में एक शोध का विषय हो सकता है'' (पृ. 84)।

इसके आगे 'काजू फेनी' कहानी में वैवाहिक और विवाहेतर प्रेम के द्वंद्व को बड़े ही रोचक ढंग से चित्रित किया गया है और विवाहेतर प्रेम की 'असफलता' को भी बड़े ही दार्शनिक ढंग से व्यक्त किया गया है। 'आधी सदी की त्रासदी' एक प्रकार से प्रत्येक सुशिक्षित आत्मनिर्भर स्त्री के वैवाहिक जीवन की त्रासदी है। इसमें वह स्त्री अपने घर-परिवार में रह कर भी इतनी अकेली हो गयी है कि उसे अपनी रसोई की बेज़ान चीज़ों के समक्ष आत्मालाप करना पड़ता है। यह स्थिति वास्तव में बेहद दयनीय और मार्मिक है। इसी क्रम में 'प्यार में क, ख, ग' कहानी भी है, जिसमें एक सुशिक्षित स्त्री अपने वैवाहिक जीवन की एकरसता से ऊब कर प्रेम को अन्यत्र खोजना और पाना चाहती है और उसके लिए एक अन्य पुरुष के साथ एक एकांत स्थल पर पिकनिक के लिए चली जाती है। वहां जा कर वह उस अन्य पुरुष के समक्ष 'बेदिंग ब्यूटी' बन कर कई प्रयोग भी करती है, जो कुछ पाठकों को अवांछित भी लग सकते हैं। लेकिन इस कहानी में भी विचारणीय मुद्दा यही है कि वैवाहिक जीवन में 'प्रेम' समाप्त हो जाने पर आख़िर स्त्री करे भी तो क्या करे?

उधर 'अंतिम साक्ष्य' कहानी में एक ऐसी स्त्री से हमारा साक्षात्कार होता है, जो कैंसर की लाइलाज़ बीमारी से जूझती है और अंत में, परिवार में किसी को उसकी सेवा करने में परेशानी न हो, इसलिए आत्महत्या भी कर लेती है! तो क्या एक घरेलू स्त्री भी तभी तक स्वीकार्य है, जब तक वह सबकी सेवा करती रहे? और बाद में जब वह सेवा करने लायक़ न रह जाये तो किसी को कष्ट न दे और आत्महत्या कर ले?

संकलन की अंतिम दो कहानियां हैं, 'मैंने क्यों कहा था, वह सुंदर है' तथा 'इक-दूजे के लिए नहीं'। इनमें पहली कहानी प्रख्यात कहानीकार यशपाल की एक कहानी 'तुमने क्यों कहा था, मैं सुंदर हूं' से प्रेरित है, हालांकि इसमें उद्देश्य कुछ अलग है। इसमें कहानीकार ने पर्याप्त तर्क़संगत ढंग से एक अधेड़ पुरुष और एक युवा लड़की के बेमेल विवाह का विरोध किया है। इसी तरह अगली और अंतिम कहानी 'इक-दूजे के लिए नहीं' में भी कहानीकार ने बौद्धिक दृष्टि से बेमेल स्त्री-पुरुष के प्रेम, विवाह या काम संबंध का विरोध करके उन्हें भूल सुधारने के प्रति सचेत किया है। उसमें उसने इस तथ्य को भी रेखांकित किया है कि परस्पर सहानुभूति या यौनाकर्षण के बावजूद परस्पर विवाह की सफलता के लिए समान बौद्धिक स्तर एवं एकसमान आयु वर्ग का होना भी बहुत ज़रूरी है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना ने अपने इस नये कहानी संकलन 'इक-दूजे के लिए नहीं' में स्त्री-पुरुष संबंधों में प्रेम, विवाह एवं काम संबंधों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत करके अलग अलग आयामों की विभिन्न स्थितियों पर प्रकाश डाला है। इस तरह ये कहानियां हमें न केवल समकालीन मध्यवर्गीय स्त्री की वास्तविकताओं से परिचित कराती हैं, अपितु उन पर सोचने को भी प्रेरित करती हैं। इनमें चित्रित कुछ प्रसंग भले ही कुछ पाठकों को 'वर्जित' लगें, लेकिन उन्हें मानवीय संदर्भों के साथ मानवोचित रूप में रखने का श्रेय तो डॉ. सक्सेना को देना ही होगा।

कोंकणी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय
गोवा-403206